كَانُوْۤا اٰبَآءَهُمْ اَوْ اَبْنَآءَهُمْ اَوْ اِخْوَانَهُمْ اَوْ عَشِیْرَتَهُمْؕ اُولٰٓىٕكَ

वोह उन के बाप या बेटे या भाई या कुम्बे वाले हों[60] येह हैं

كَتَبَ فِیْ قُلُوْبِهِمُ الْاِیْمَانَ وَ اَیَّدَهُمْ بِرُوْحٍ مِّنْهُؕ وَ یُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ

जिन के दिलों में **अल्लाह** ने ईमान नक़्श फ़रमा दिया और अपनी त़रफ़ की रूह़ से उन की मदद की[61] और उन्हें बाग़ों में

تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ فِیْهَاؕ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَ رَضُوْا

ले जाएगा जिन के नीचे नहरें बहें उन में हमेशा रहें **अल्लाह** उन से राज़ी[62] और वोह **अल्लाह** से

ع ٤ عَنْهُؕ اُولٰٓىٕكَ حِزْبُ اللّٰهِؕ اَلَاۤ اِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۲۲﴾

राज़ी[63] येह **अल्लाह** की जमाअ़त है सुनता है **अल्लाह** ही की जमाअ़त काम्याब है

اٰیاتها ٢٤ | ٥٩ سُوْرَةُ الْحَشْرِ مَدَنِیَّةٌ ١٠١ | رکوعاتها ٣

सूरए ह़श्र मदनिय्या है, इस में चौबीस आयतें और तीन रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الْاَرْضِۚ وَ هُوَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ﴿۱﴾

अल्लाह की पाकी बोलता है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में और वोही इ़ज़्ज़त व ह़िक्मत वाला है[2]

ही नहीं सकता और उन की येह शान ही नहीं और ईमान इस को गवारा ही नहीं करता कि ख़ुदा और रसूल के दुश्मन से दोस्ती करे। **मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि बद दीनों और बद मज़्हबों और ख़ुदा व रसूल की शान में गुस्ताख़ी और बे अदबी करने वालों से मुवद्दत व इख़्तिलात़ जाइज़ नहीं। **60 :** चुनान्चे ह़ज़रते अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ ने जंगे उहुद में अपने बाप जर्राह़ को क़त्ल किया और ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने रोज़े बद्र अपने बेटे अ़ब्दुर्रह़मान को मुबारज़त के लिये त़लब किया लेकिन रसूले करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ने उन्हें इस जंग की इजाज़त न दी और मुस्अ़ब बिन उ़मैर ने अपने भाई अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मैर को क़त्ल किया और ह़ज़रते उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अपने मामूं आ़स बिन हिशाम बिन मुग़ीरा को रोज़े बद्र क़त्ल किया और ह़ज़रते अ़ली बिन अबी त़ालिब व ह़म्ज़ा व अबू उ़बैदा ने रबीआ़ के बेटों उ़त्बा और शैबा को और वलीद बिन उ़त्बा को बद्र में क़त्ल किया जो उन के रिश्तेदार थे, ख़ुदा और रसूल पर ईमान लाने वालों को क़राबत और रिश्तेदारी का क्या पास। **61 :** इस रूह़ से या **अल्लाह** की मदद मुराद है या ईमान या क़ुरआन या जिब्रील या रह़मते इलाही या नूर। **62 :** ब सबब उन के ईमान व इख़्लास व त़ाअ़त के **63 :** उस के रह़मो करम से **1 :** सूरए ह़श्र मदनिय्या है, इस में तीन 3 रुकूअ़, चौबीस 24 आयतें, चार सो पैंतालीस 445 कलिमे, एक हज़ार नव सो तेरह 1913 ह़र्फ़ हैं। **2 शाने नुज़ूल :** येह सूरत बनी नज़ीर के ह़क़ में नाज़िल हुई, येह लोग यहूदी थे, जब नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم मदीनए त़य्यिबा में रौनक़ अफ़रोज़ हुए तो इन्हों ने हु़ज़ूर से इस शर्त़ पर सुल्ह़ की कि न आप के साथ हो कर किसी से लड़ें न आप से जंग करें, जब जंगे बद्र में इस्लाम की फ़त्ह़ हुई तो बनी नज़ीर ने कहा येह वोही नबी हैं जिन की सिफ़त तौरैत में है, फिर जब उहुद में मुसल्मानों को हज़ीमत की सूरत पेश आई तो येह शक में पड़े और इन्हों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم और हु़ज़ूर के नियाज़ मन्दों के साथ अ़दावत का इज़्हार किया और जो मुआ़हदा किया था वोह तोड़ दिया और इन का एक सरदार का'ब बिन अशरफ़ यहूदी चालीस यहूदी सुवारों को साथ ले कर मक्कए मुकर्रमा पहुंचा और का'बए मुअ़ज़्ज़मा के पर्दे थाम कर क़ुरैश के सरदारों से रसूले करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم के ख़िलाफ़ मुआ़हदा किया **अल्लाह** तआ़ला के इ़ल्म देने से हु़ज़ूर इस ह़ाल पर मुत्तलअ़ थे और बनी नज़ीर से एक ख़ियानत और भी वाक़ेअ़ हो चुकी थी कि इन्हों ने क़ल्ए़ के ऊपर से सय्यिदे आ़लम

www.dawateislami.net

هُوَ الَّذِیْۤ اَخْرَجَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ دِیَارِهِمْ

वोही है जिस ने उन काफ़िर किताबियों को[3] उन के घरों से निकाला[4]

لِاَوَّلِ الْحَشْرِ ؕ مَا ظَنَنْتُمْ اَنْ یَّخْرُجُوْا وَ ظَنُّوْۤا اَنَّهُمْ مَّانِعَتُهُمْ

उन के पहले ह़श्र के लिये[5] तुम्हें गुमान न था कि वोह निकलेंगे[6] और वोह समझते थे कि उन के क़ल्ए

وقف النبی علیہ السلام

حُصُوْنُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَاَتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ حَیْثُ لَمْ یَحْتَسِبُوْا ۗ وَ قَذَفَ فِیْ

उन्हें अल्लाह से बचा लेंगे तो अल्लाह का हुक्म उन के पास आया जहां से उन का गुमान भी न था[7] और उस ने उन

قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ یُخْرِبُوْنَ بُیُوْتَهُمْ بِاَیْدِیْهِمْ وَ اَیْدِی الْمُؤْمِنِیْنَ ۗ

के दिलों में रो'ब डाला[8] कि अपने घर वीरान करते हैं अपने हाथों[9] और मुसल्मानों के हाथों[10]

فَاعْتَبِرُوْا یٰۤاُولِی الْاَبْصَارِ ۝۲ وَ لَوْ لَاۤ اَنْ كَتَبَ اللّٰهُ عَلَیْهِمُ الْجَلَآءَ

तो इब्रत लो ऐ निगाह वालो और अगर न होता कि अल्लाह ने उन पर घर से उजड़ना लिख दिया था

لَعَذَّبَهُمْ فِی الدُّنْیَا ؕ وَ لَهُمْ فِی الْاٰخِرَةِ عَذَابُ النَّارِ ۝۳ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ

तो दुन्या ही में उन पर अ़ज़ाब फ़रमाता[11] और उन के लिये[12] आख़िरत में आग का अ़ज़ाब है येह इस लिये कि वोह

شَآقُّوا اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ ۚ وَ مَنْ یُّشَآقِّ اللّٰهَ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِیْدُ الْعِقَابِ ۝۴

अल्लाह से और उस के रसूल से फटे रहे[13] और जो अल्लाह और उस के रसूल से फटा रहे तो बेशक अल्लाह का अ़ज़ाब सख़्त है

صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم पर ब इरादए फ़ासिद एक पथ्थर गिराया था अल्लाह तआ़ला ने हुज़ूर को ख़बरदार कर दिया और बि फ़ज़्लिही तआ़ला हुज़ूर मह़फ़ूज़ रहे, ग़रज़ जब यहूदे बनी नज़ीर ने ख़ियानत की और अ़ह्द शिकनी की और कुफ़्फ़ारे क़ुरैश से हुज़ूर के ख़िलाफ़ अ़ह्द किया तो सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने मुह़म्मद बिन मस्लमा अन्सारी को हुक्म दिया और उन्हों ने का'ब बिन अशरफ़ को क़त्ल कर दिया, फिर हुज़ूर मअ़ लश्कर के बनी नज़ीर की त़रफ़ रवाना हुए और उन का मुह़ासरा कर लिया, येह मुह़ासरा इक्कीस रोज़ रहा, इस दरमियान में मुनाफ़िक़ीन ने यहूद से हमदर्दी व मुवाफ़क़त के बहुत मुआ़हदे किये लेकिन अल्लाह तआ़ला ने उन सब को नाकाम किया, यहूद के दिलों में रो'ब डाला, आख़िर कार उन्हें हुज़ूर के हुक्म से जला वत़न होना पड़ा और वोह शाम व उरैह़ा व ख़ैबर की त़रफ़ चले गए। **3 :** या'नी यहूदे बनी नज़ीर को **4 :** जो मदीनए त़य्यिबा में थे। **5 :** येह जला वत़नी उन का पहला ह़श्र है और दूसरा ह़श्र उन का येह है कि अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें अपने ज़मानए ख़िलाफ़त में ख़ैबर से शाम की त़रफ़ निकाला या आख़िर ह़श्र रोज़े क़ियामत का ह़श्र है कि आग सब लोगों को सर ज़मीने शाम की त़रफ़ ले जाएगी और वहीं उन पर क़ियामत क़ाइम होगी। इस के बा'द अहले इस्लाम से ख़ित़ाब फ़रमाया जाता है : **6 :** मदीने से क्यूं कि वोह साह़िबे क़ुव्वत साह़िबे लश्कर थे, मज़बूत़ क़ल्ए रखते थे, उन की ता'दाद कसीर थी, जागीर दार साह़िबे माल। **7 :** या'नी ख़त़रा भी न था कि मुसल्मान उन पर ह़म्ला आवर हो सकते हैं। **8 :** उन के सरदार का'ब बिन अशरफ़ के क़त्ल से। **9 :** और उन को ढाते हैं ताकि जो लकड़ी वग़ैरा उन्हें अच्छी मा'लूम हो वोह जला वत़न होते वक़्त अपने साथ ले जाएं। **10 :** कि उन के मकानों के जो ह़िस्से बाक़ी रह जाते थे उन्हें मुसल्मान गिरा देते थे ताकि जंग के लिये मैदान साफ़ हो जाए। **11 :** और उन्हें क़त्ल व क़ैद में मुब्तला करता जैसा कि यहूदे बनी क़ुरैज़ा के साथ किया। **12 :** हर ह़ाल में ख़्वाह जला वत़न किये जाएं या क़त्ल किये जाएं **13 :** या'नी बर सरे मुख़ालफ़त रहे।

www.dawateislami.net

مَا قَطَعْتُمْ مِّنْ لِّيْنَةٍ اَوْ تَرَكْتُمُوْهَا قَآئِمَةً عَلٰٓى اُصُوْلِهَا فَبِاِذْنِ اللّٰهِ وَ

जो दरख़्त तुम ने काटे या उन की जड़ों पर क़ाइम छोड़ दिये येह सब अल्लाह की इजाज़त से था[14] और

لِيُخْزِيَ الْفٰسِقِيْنَ ۝٥ وَمَآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْهُمْ فَمَآ اَوْجَفْتُمْ

इस लिये कि फ़ासिक़ों को रुस्वा करे[15] और जो ग़नीमत दिलाई अल्लाह ने अपने रसूल को उन से[16] तो तुम ने उन पर

عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَّلَا رِكَابٍ وَّلٰكِنَّ اللّٰهَ يُسَلِّطُ رُسُلَهٗ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ؕ

न अपने घोड़े दौड़ाए थे न ऊंट[17] हां अल्लाह अपने रसूलों के क़ाबू में दे देता है जिसे चाहे[18]

وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٦ مَآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْ اَهْلِ

और अल्लाह सब कुछ कर सकता है जो ग़नीमत दिलाई अल्लाह ने अपने रसूल को शहर

الْقُرٰى فَلِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ وَلِذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ

वालों से[19] वोह अल्लाह और रसूल की है और रिश्तेदारों[20] और यतीमों और मिस्कीनों और

السَّبِيْلِ ۙ كَيْ لَا يَكُوْنَ دُوْلَةً بَيْنَ الْاَغْنِيَآءِ مِنْكُمْ ؕ وَمَآ اٰتٰىكُمُ

मुसाफ़िरों के लिये कि तुम्हारे अग़्निया का माल न हो जाए[21] और जो कुछ तुम्हें रसूल

14 शाने नुज़ूल : जब बनी नज़ीर अपने क़ल्अों में पनाह गुज़ीन हुए तो सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उन के दरख़्त काट डालने और उन्हें जला देने का हुक्म दिया, इस पर वोह दुश्मनाने ख़ुदा बहुत घबराए और रन्जीदा हुए और कहने लगे कि क्या तुम्हारी किताब में इस का हुक्म है ? मुसल्मान इस बाब में मुख़्तलिफ़ हो गए बा'ज़ ने कहा : दरख़्त न काटो येह ग़नीमत है जो अल्लाह तआ़ला ने हमें अ़ता फ़रमाई, बा'ज़ ने कहा : इस से कुफ़्फ़ार को रुस्वा करना और उन्हें ग़ैज़ में डालना मन्ज़ूर है, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और इस में बताया गया कि मुसल्मानों में जो दरख़्त काटने वाले हैं उन का अ़मल भी दुरुस्त है और जो काटना नहीं चाहते वोह भी ठीक कहते हैं क्यूं कि दरख़्तों का काटना और छोड़ देना येह दोनों अल्लाह तआ़ला के इज़्न व इजाज़त से हैं। **15 :** या'नी यहूद को ज़लील करे दरख़्त काटने की इजाज़त दे कर। **16 :** या'नी यहूदे बनी नज़ीर से **17 :** या'नी इस के लिये तुम्हें कोई मशक़्क़त और कोफ़्त उठाना नहीं पड़ी, सिर्फ़ दो मील का फ़ासिला था, सब लोग पियादा पा चले गए सिर्फ़ रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم सुवार हुए। **18 :** अपने दुश्मनों में से, मुराद येह है कि बनी नज़ीर से जो ग़नीमतें ह़ासिल हुईं उन के लिये मुसल्मानों को जंग करना नहीं पड़ी अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को उन पर मुसल्लत़ कर दिया तो येह माल हुज़ूर की मरज़ी पर है जहां चाहें ख़र्च करें, रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने येह माल मुहाजिरीन पर तक़्सीम कर दिया और अन्सार में से सिर्फ़ तीन साहिबे ह़ाजत लोगों को दिया और वोह अबू दुजाना सिमाक बिन ख़रशा और सह्ल बिन हुनैफ़ और ह़ारिस बिन सिम्मा हैं। **19 :** पहली आयत में ग़नीमत का जो हुक्म मज़्कूर हुवा उस आयत में इसी की तफ़्सील है और बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने इस क़ौल की मुख़ालफ़त की और फ़रमाया कि पहली आयत अम्वाले बनी नज़ीर के बाब में नाज़िल हुई इन को अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल के लिये ख़ास किया और येह आयत हर उस शह़र की ग़नीमतों के बाब में है जिस को मुसल्मान अपनी क़ुव्वत से ह़ासिल करें। (مدارک) **20 :** रिश्तेदारों से मुराद नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के अहले क़राबत हैं या'नी बनी हाशिम व बनी मुत्तलिब। **21 :** और ग़ुरबा और फ़ुक़रा नुक़्सान में रहें जैसा कि ज़मानए जाहिलिय्यत में दस्तूर था कि ग़नीमत में से एक चहारुम तो सरदार ले लेता था बाक़ी क़ौम के लिये छोड़ देता था उस में से मालदार लोग बहुत ज़ियादा ले लेते थे और ग़रीबों के लिये बहुत ही थोड़ा बचता था, इसी मा'मूल के मुत़ाबिक़ लोगों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर ग़नीमत में से चहारुम लें बाक़ी हम बाहम तक़्सीम कर लेंगे अल्लाह तआ़ला ने इस का रद फ़रमा दिया और तक़्सीम का इख़्तियार नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को दिया और इस का त़रीक़ा इर्शाद फ़रमाया।

www.dawateislami.net

الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ ۗ وَمَا نَهٰىكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

अ़ता फ़रमाएं वोह लो[22] और जिस से मन्अ़ फ़रमाएं बाज़ रहो और अल्लाह से डरो[23] बेशक अल्लाह

شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۘ﴿۷﴾ لِلْفُقَرَآءِ الْمُهٰجِرِيْنَ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ

का अ़ज़ाब सख़्त है[24] उन फ़क़ीर हिजरत करने वालों के लिये जो अपने घरों

دِيَارِهِمْ وَاَمْوَالِهِمْ يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا وَّيَنْصُرُوْنَ

और मालों से निकाले गए[25] अल्लाह का फ़ज़्ल[26] और उस की रिज़ा चाहते और अल्लाह व रसूल

اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ۚ﴿۸﴾ وَالَّذِيْنَ تَبَوَّؤُ الدَّارَ وَ

की मदद करते[27] वोही सच्चे हैं[28] और जिन्हों ने पहले से[29] इस शहर[30]

الْاِيْمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ يُحِبُّوْنَ مَنْ هَاجَرَ اِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُوْنَ فِيْ

और ईमान में घर बना लिया[31] दोस्त रखते हैं उन्हें जो उन की तरफ़ हिजरत कर के गए[32] और अपने दिलों में

صُدُوْرِهِمْ حَاجَةً مِّمَّآ اُوْتُوْا وَيُؤْثِرُوْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ

कोई ह़ाजत नहीं पाते[33] उस चीज़ की जो दिये गए[34] और अपनी जानों पर उन को तरजीह़ देते हैं[35] अगर्चे उन्हें शदीद

خَصَاصَةٌ ؕ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۚ﴿۹﴾ وَ

मोह़ताजी हो[36] और जो अपने नफ़्स के लालच से बचाया गया[37] तो वोही काम्याब हैं और

22 : ग़नीमत में से क्यूं कि वोह तुम्हारे लिये ह़लाल है या येह मा'ना हैं कि रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم तुम्हें जो हुक्म दें उस का इत्तिबाअ़ करो क्यूं कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की इत़ाअ़त हर अम्र में वाजिब है। **23 :** नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की मुख़ालफ़त न करो और इन के ता'मीले इर्शाद में सुस्ती न करो **24 :** उन पर जो रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ना फ़रमानी करें और माले ग़नीमत में जैसा कि ऊपर ज़िक्र किये हुए लोगों का ह़क़ है ऐसा ही **25 :** और उन के घरों और मालों पर कुफ़्फ़ारे मक्का ने क़ब्ज़ा कर लिया। **मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि कुफ़्फ़ार इस्तीलाअ (क़ब्ज़ा करने) से अम्वाले मुस्लिमीन के मालिक हो जाते हैं। **26 :** या'नी सवाबे आख़िरत **27 :** अपने जान व माल से दीन की ह़िमायत में **28 :** ईमान व इख़्लास में। क़तादा ने फ़रमाया कि इन मुहाजिरीन ने घर और माल और कुम्बे अल्लाह तआ़ला और रसूल की मह़ब्बत में छोड़े और इस्लाम को क़बूल किया और उन तमाम शिद्दतों और सख़्तियों को गवारा किया जो इस्लाम क़बूल करने की वज्ह से उन्हें पेश आईं, उन की ह़ालतें यहां तक पहुंचीं कि भूक की शिद्दत से पेट पर पथ्थर बांधते थे और जाड़ों में कपड़ा न होने के बाइ़स गढ़ों और ग़ारों में गुज़ारा करते थे। ह़दीस शरीफ़ में है कि फ़ुक़राए मुहाजिरीन अग़्निया से चालीस साल क़ब्ल जन्नत में जाएंगे। **29 :** या'नी मुहाजिरीन से पहले या इन की हिजरत से पहले बल्कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी से पहले **30 :** मदीनए पाक **31 :** या'नी मदीनए पाक को वत़न और ईमान को अपना मुस्तक़र बनाया और इस्लाम लाए और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी से दो साल पहले मस्जिदें बनाईं उन का येह ह़ाल है कि **32 :** चुनान्चे अपने घरों में उन्हें उतारते हैं अपने मालों में उन्हें निस्फ़ का शरीक करते हैं **33 :** या'नी उन के दिलों में कोई ख़्वाहिश व त़लब नहीं पैदा होती। **34 :** मुहाजिरीन, या'नी मुहाजिरीन को जो अम्वाले ग़नीमत दिये गए अन्सार के दिल में उन की कोई ख़्वाहिश नहीं पैदा होती रश्क तो क्या होता सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की बरकत ने क़ुलूब ऐसे पाक कर दिये कि अन्सार मुहाजिरीन के साथ येह सुलूक करते हैं **35 :** या'नी मुहाजिरीन को **36 शाने नुज़ूल :** ह़दीस शरीफ़ में है कि रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में एक भूका शख़्स आया हुज़ूर ने अज़्वाजे मुत़ह्हरात के हुजरों पर मा'लूम कराया

www.dawateislami.net

الَّذِیْنَ جَآءُوْ مِنْۢ بَعْدِهِمْ یَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَ لِاِخْوَانِنَا

वोह जो उन के बा'द आए[38] अ़र्ज़ करते हैं ऐ हमारे रब हमें बख़्श दे और हमारे भाइयों को

الَّذِیْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِیْمَانِ وَ لَا تَجْعَلْ فِیْ قُلُوْبِنَا غِلًّا لِّلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا

जो हम से पहले ईमान लाए और हमारे दिल में ईमान वालों की त़रफ़ से कीना न रख[39]

رَبَّنَاۤ اِنَّكَ رَءُوْفٌ رَّحِیْمٌ ﴿۱۰﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِیْنَ نَافَقُوْا یَقُوْلُوْنَ

ऐ रब हमारे बेशक तू ही निहायत मेहरबान रह़म वाला है क्या तुम ने मुनाफ़िक़ों को न देखा[40] कि अपने भाइयों

لِاِخْوَانِهِمُ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَىٕنْ اُخْرِجْتُمْ لَنَخْرُجَنَّ

काफ़िर किताबियों[41] से कहते हैं कि अगर तुम निकाले गए[42] तो ज़रूर हम तुम्हारे साथ निकल

مَعَكُمْ وَ لَا نُطِیْعُ فِیْكُمْ اَحَدًا اَبَدًا ۙ وَّ اِنْ قُوْتِلْتُمْ لَنَنْصُرَنَّكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ

जाएंगे और हरगिज़ तुम्हारे बारे में कभी किसी की न मानेंगे[43] और तुम से लड़ाई हुई तो हम ज़रूर तुम्हारी मदद करेंगे और **अल्लाह**

یَشْهَدُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿۱۱﴾ لَىٕنْ اُخْرِجُوْا لَا یَخْرُجُوْنَ مَعَهُمْ ۚ وَ لَىٕنْ

गवाह है कि वोह झूटे हैं[44] अगर वोह निकाले गए[45] तो येह उन के साथ न निकलेंगे और उन से

قُوْتِلُوْا لَا یَنْصُرُوْنَهُمْ ۚ وَ لَىٕنْ نَّصَرُوْهُمْ لَیُوَلُّنَّ الْاَدْبَارَ ۫ ثُمَّ لَا

लड़ाई हुई तो येह उन की मदद न करेंगे[46] और अगर उन की मदद की भी तो ज़रूर पीठ फेर कर भागेंगे फिर[47]

क्या खाने की कोई चीज़ है, मा'लूम हुवा किसी बीबी साहिबा के यहां कुछ भी नहीं है, तब हुज़ूर ने अस्ह़ाब से फ़रमाया जो इस शख़्स को मेहमान बनाए **अल्लाह** तआ़ला उस पर रह़मत फ़रमाए, ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा अन्सारी खड़े हो गए और हुज़ूर से इजाज़त ले कर मेहमान को अपने घर ले गए, घर जा कर बीबी से दरयाफ़्त किया कुछ है ? उन्हों ने कहा कुछ नहीं सिर्फ़ बच्चों के लिये थोड़ा सा खाना रखा है, ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा ने फ़रमाया बच्चों को बहला कर सुला दो और जब मेहमान खाने बैठे तो चराग़ दुरुस्त करने उठो और चराग़ को बुझा दो ताकि वोह अच्छी त़रह़ खा ले, येह इस लिये तज्वीज़ की कि मेहमान येह न जान सके कि अहले ख़ाना उस के साथ नहीं खा रहे हैं क्यूं कि उस को येह मा'लूम होगा तो वोह इसरार करेगा और खाना कम है भूका रह जाएगा, इस त़रह़ मेहमान को खिलाया और आप उन साहिबों ने भूके रात गुज़ारी, जब सुब्ह़ हुई और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए तो हुज़ूरे अक़्दस عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया रात फुलां फुलां लोगों में अ़जीब मुआ़मला पेश आया **अल्लाह** तआ़ला उन से बहुत राज़ी है और येह आयत नाज़िल हुई । **37 :** या'नी जिस के नफ़्स को लालच से पाक किया गया **38 :** या'नी मुहाजिरीन व अन्सार के । इस में क़ियामत तक पैदा होने वाले मुसल्मान दाख़िल हैं **39 :** या'नी अस्ह़ाबे रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की त़रफ़ से । **मस्अला :** जिस के दिल में किसी सह़ाबी की त़रफ़ से बुग़्ज़ या कदूरत हो और वोह उन के लिये दुआए रह़मत व इस्तिग़्फ़ार न करे वोह मोमिनीन की अक़्साम से ख़ारिज है क्यूं कि यहां मोमिनीन की तीन क़िस्में फ़रमाई गईं । मुहाजिरीन अन्सार और उन के बा'द वाले जो उन के ताबेअ़ हों और उन की त़रफ़ से दिल में कोई कदूरत न रखें और उन के लिये दुआए मग़्फ़िरत करें तो जो सह़ाबा से कदूरत रखे राफ़िज़ी हो या ख़ारिजी वोह मुसल्मानों की इन तीनों क़िस्मों से ख़ारिज है । ह़ज़रते उम्मुल मुअमिनीन आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने फ़रमाया कि लोगों को हुक्म तो येह दिया गया कि सह़ाबा के लिये इस्तिग़्फ़ार करें और करते येह हैं कि गालियां देते हैं । **40 :** अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल मुनाफ़िक़ और उस के रफ़ीक़ों को **41 :** या'नी यहूदे बनी क़ुरैज़ा व बनी नज़ीर **42 :** मदीने शरीफ़ से **43 :** या'नी तुम्हारे ख़िलाफ़ किसी का कहा न मानेंगे न मुसल्मानों का न रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم का **44 :** या'नी यहूद से मुनाफ़िक़ीन के येह सब वा'दे झूटे हैं इस के बा'द **अल्लाह** तआ़ला मुनाफ़िक़ीन के ह़ाल की ख़बर देता है । **45 :** या'नी यहूद **46 :** चुनान्चे ऐसा ही हुवा कि यहूद निकाले गए और मुनाफ़िक़ीन उन के साथ न निकले और यहूद से मुक़ातला हुवा और मुनाफ़िक़ीन ने यहूद की मदद न की । **47 :** जब येह मददगार भाग

www.dawateislami.net

يُنْصَرُوْنَ ﴿١٢﴾ لَاَنْتُمْ اَشَدُّ رَهْبَةً فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنَ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ

मदद न पाएंगे बेशक[48] उन के दिलों में अल्लाह से ज़ियादा तुम्हारा डर है[49] येह इस लिये

بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ﴿١٣﴾ لَا يُقَاتِلُوْنَكُمْ جَمِيْعًا اِلَّا فِيْ قُرًى مُّحَصَّنَةٍ

कि वोह ना समझ लोग हैं[50] येह सब मिल कर भी तुम से न लड़ेंगे मगर क़ल्आ़ बन्द शहरों में

اَوْ مِنْ وَّرَآءِ جُدُرٍ ؕ بَاْسُهُمْ بَيْنَهُمْ شَدِيْدٌ ؕ تَحْسَبُهُمْ جَمِيْعًا وَّ

या धुसों (दीवारों) के पीछे आपस में उन की आंच सख़्त है[51] तुम उन्हें एक जथ्था (जमाअ़त) समझोगे और

قُلُوْبُهُمْ شَتّٰى ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُوْنَ ﴿١٤﴾ ۚ كَمَثَلِ الَّذِيْنَ مِنْ

उन के दिल अलग अलग हैं येह इस लिये कि वोह बे अ़क़्ल लोग हैं[52] उन की सी कहावत जो अभी क़रीब

قَبْلِهِمْ قَرِيْبًا ذَاقُوْا وَبَالَ اَمْرِهِمْ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٥﴾ ۚ كَمَثَلِ

ज़माने में उन से पहले थे[53] उन्हों ने अपने काम का वबाल चखा[54] और उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है[55] शैतान

الشَّيْطٰنِ اِذْ قَالَ لِلْاِنْسَانِ اكْفُرْ ۚ فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّنْكَ اِنِّيْٓ

की कहावत जब उस ने आदमी से कहा कुफ़्र कर फिर जब उस ने कुफ़्र कर लिया बोला मैं तुझ से अलग हूं मैं

اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦﴾ فَكَانَ عَاقِبَتَهُمَآ اَنَّهُمَا فِي النَّارِ

अल्लाह से डरता हूं जो सारे जहान का रब[56] तो उन दोनों का[57] अन्जाम येह हुवा कि वोह दोनों आग में हैं

خَالِدَيْنِ فِيْهَا ؕ وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٧﴾ ع يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ع ٢ ٥

हमेशा उस में रहें और ज़ालिमों की येही सज़ा है ऐ ईमान वालो

اتَّقُوا اللّٰهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

अल्लाह से डरो[58] और हर जान देखे कि कल के लिये क्या आगे भेजा[59] और अल्लाह से डरो[60] बेशक अल्लाह

निकलेंगे तो मुनाफ़िक़ **48 :** ऐ मुसल्मानो ! **49 :** कि तुम्हारे सामने तो इ़ज़्हारे कुफ़्र से डरते हैं और येह जानते हुए भी कि अल्लाह तआ़ला दिलों की छुपी बातें जानता है दिल में कुफ़्र रखते हैं। **50 :** अल्लाह तआ़ला की अ़ज़मत को नहीं जानते वरना जैसा उस से डरने का हक़ है डरते। **51 :** या'नी जब वोह आपस में लड़ें तो बहुत शिद्दत और क़ुव्वत वाले हैं लेकिन मुसल्मानों के मुक़ाबिल बुज़दिल और नामर्द साबित होंगे। **52 :** इस के बा'द यहूद की एक मसल इर्शाद फ़रमाई। **53 :** या'नी उन का हाल मुश्रिकीने मक्का का सा है कि बद्र में **54 :** या'नी रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ अ़दावत रखने और कुफ़्र करने का कि ज़िल्लतो रुस्वाई के साथ हलाक किये गए। **55 :** और मुनाफ़िक़ीन का यहूदे बनी नज़ीर के साथ सुलूक ऐसा है जैसे **56 :** ऐसे ही मुनाफ़िक़ीन ने यहूदे बनी नज़ीर को मुसल्मानों के ख़िलाफ़ उभारा जंग पर आमादा किया उन से मदद के वा'दे किये और जब उन के कहे से वोह अहले इस्लाम से बर सरे जंग हुए तो मुनाफ़िक़ बैठ रहे उन का साथ न दिया। **57 :** या'नी उस शैतान व इन्सान का **58 :** और उस के हुक्म की मुख़ालफ़त न करो **59 :** या'नी रोज़े क़ियामत के लिये क्या आ'माल किये **60 :** उस की ता़अ़त व फ़रमां बरदारी में सरगर्म रहो।

www.dawateislami.net

خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٨﴾ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ نَسُوا اللّٰهَ فَاَنْسٰىهُمْ

को तुम्हारे कामों की ख़बर है और उन जैसे न हो जो अल्लाह को भूल बैठे[61] तो अल्लाह ने उन्हें बला में डाला कि अपनी

اَنْفُسَهُمْ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿١٩﴾ لَا يَسْتَوِيْٓ اَصْحٰبُ النَّارِ وَاَصْحٰبُ

जानें याद न रहीं[62] वोही फ़ासिक़ हैं दोज़ख़ वाले[63] और जन्नत वाले[64]

الْجَنَّةِ ؕ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿٢٠﴾ لَوْ اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْاٰنَ عَلٰى

बराबर नहीं जन्नत वाले ही मुराद को पहुंचे अगर हम येह क़ुरआन किसी पहाड़ पर

جَبَلٍ لَّرَاَيْتَهٗ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ؕ وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ

उतारते[65] तो ज़रूर तू उसे देखता झुका हुवा पाश पाश होता अल्लाह के ख़ौफ़ से[66] और येह मिसालें

نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢١﴾ هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ

लोगों के लिये हम बयान फ़रमाते हैं कि वोह सोचें वोही अल्लाह है जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं

عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ﴿٢٢﴾ هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ

हर निहां व इयां (छुपी व ज़ाहिर) का जानने वाला[67] वोही है बड़ा मेहरबान रहमत वाला वोही है अल्लाह जिस के सिवा

اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ

कोई मा'बूद नहीं बादशाह[68] निहायत पाक[69] सलामती देने वाला[70] अमान बख़्शने वाला[71] हिफ़ाज़त फ़रमाने वाला इज़्ज़त वाला

الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٢٣﴾ هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ

अज़मत वाला तकब्बुर वाला[72] अल्लाह को पाकी है उन के शिर्क से वोही है अल्लाह बनाने वाला

الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ؕ يُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ

पैदा करने वाला[73] हर एक को सूरत देने वाला[74] उसी के हैं सब अच्छे नाम[75] उस की पाकी बोलता है जो कुछ आस्मानों

61 : उस की ताअ़त तर्क की 62 : कि उन के लिये फ़ाएदा देने वाले और काम आने वाले अ़मल कर लेते 63 : जिन के लिये दाइमी अ़ज़ाब है। 64 : जिन के लिये ऐशे मुख़ल्लद व राहते सरमद (हमेशा की ऐशो इशरत) है। 65 : और उस को इन्सान की सी तमीज़ अ़ता करते 66 : या'नी क़ुरआन की अ़ज़मतो शान ऐसी है कि पहाड़ को अगर इदराक होता तो वोह बा वुजूद इतना सख़्त और मज़बूत होने के पाश पाश हो जाता, इस से मा'लूम होता है कि कुफ़्फ़ार के दिल कितने सख़्त हैं कि ऐसे बा अ़ज़मत कलाम से असर पज़ीर नहीं होते। 67 : मौजूद का भी और मा'दूम का भी दुन्या का भी और आख़िरत का भी। 68 : मिल्क व हुकूमत का हक़ीक़ी मालिक कि तमाम मौजूदात उस के तहते मिल्क व हुकूमत है और उस की मालिकिय्यत व सल्तनत दाइमी है जिसे ज़वाल नहीं। 69 : हर ऐब से और तमाम बुराइयों से 70 : अपनी मख़्लूक़ को, 71 : अपने अ़ज़ाब से अपने फ़रमां बरदार बन्दों को, 72 : या'नी अ़ज़मत और बड़ाई वाला अपनी ज़ात और तमाम सिफ़ात में और अपनी बड़ाई का इज़्हार उसी के शायां और लाइक़ है कि उस का हर कमाल अ़ज़ीम है और हर सिफ़त आली, मख़्लूक़ में किसी को नहीं पहुंचता कि तकब्बुर या'नी अपनी बड़ाई का इज़्हार करे। बन्दे के लिये इज्ज़ व इन्किसार शायां है। 73 : नेस्त से हस्त करने वाला। 74 : जैसी चाहे। 75 : निनानवे 99 जो हदीस में वारिद हैं।

www.dawateislami.net

وَالْاَرْضِؕ وَهُوَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ﴿۲۴﴾ ع

और ज़मीन में है और वोही इ़ज़्ज़त व ह़िक्मत वाला है

ایاتها ١٣ ۞ ٦٠ سُوْرَةُ الْمُمْتَحِنَةِ مَدَنِيَّةٌ ٩١ ۞ رکوعاتها ٢

सूरए मुम्तह़िनह मदनिय्या है, इस में तेरह आयतें और दो रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا عَدُوِّیْ وَعَدُوَّكُمْ اَوْلِیَآءَ تُلْقُوْنَ

ऐ ईमान वालो मेरे और अपने दुश्मनों को दोस्त न बनाओ[2] तुम उन्हें ख़बरें

اِلَیْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ وَقَدْ كَفَرُوْا بِمَا جَآءَكُمْ مِّنَ الْحَقِّۚ یُخْرِجُوْنَ

पहुंचाते हो दोस्ती से ह़ालां कि वोह मुन्किर हैं उस ह़क़ के जो तुम्हारे पास आया[3] घर से जुदा करते हैं[4]

1 : सूरए मुम्तह़िनह मदनिय्या है, इस में दो 2 रुकूअ़, तेरह 13 आयतें, तीन सो अड़तालीस 348 कलिमे, एक हज़ार पांच सो दस 1510 ह़र्फ़ हैं। 2 : या'नी कुफ़्फ़ार को। **शाने नुज़ूल :** बनी हाशिम के ख़ानदान की एक बांदी सारह मदीनए त़य्यिबा में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के हुज़ूर में ह़ाज़िर हुई जब कि हुज़ूर फ़त्ह़े मक्का का सामान फ़रमा रहे थे, हुज़ूर ने उस से फ़रमाया : क्या तू मुसल्मान हो कर आई ? उस ने कहा : नहीं, फ़रमाया : क्या हिजरत कर के आई ? अ़र्ज़ किया : नहीं, फ़रमाया : फिर क्यूं आई ? उस ने कहा : मोह़ताजी से तंग हो कर। बनी अ़ब्दुल मुत्त़लिब ने उस की इमदाद की कपड़े बनाए सामान दिया, ह़ात़िब बिन अबी बल्तआ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه उस से मिले, उन्हों ने उस को दस दीनार दिये एक चादर दी और एक ख़त़ अहले मक्का के पास उस की मा'रिफ़त भेजा जिस का मज़्मून येह था कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم तुम पर ह़म्ले का इरादा रखते हैं तुम से अपने बचाव की जो तदबीर हो सके करो, सारह येह ख़त़ ले कर रवाना हो गई **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीब को इस की ख़बर दी, हुज़ूर ने अपने चन्द अस्ह़ाब को जिन में ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه भी थे घोड़ों पर रवाना किया और फ़रमाया मक़ाम रौज़ा ख़ाख़ पर तुम्हें एक मुसाफ़िर औ़रत मिलेगी उस के पास ह़ात़िब बिन अबी बल्तआ़ का ख़त़ है जो अहले मक्का के नाम लिखा गया है, वोह ख़त़ उस से ले लो और उस को छोड़ दो, अगर इन्कार करे तो उस की गरदन मार दो, येह ह़ज़रात रवाना हुए और औ़रत को ठीक उसी मक़ाम पर पाया जहां हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया था, उस से ख़त़ मांगा वोह इन्कार कर गई और क़सम खा गई, सह़ाबा ने वापसी का क़स्द किया ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने ब क़सम फ़रमाया कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़बर ख़िलाफ़ हो ही नहीं सकती और तलवार खींच कर औ़रत से फ़रमाया या ख़त़ निकाल या गरदन रख, जब उस ने देखा कि ह़ज़रत बिल्कुल आमादए क़त्ल हैं तो अपने जूड़े में से ख़त़ निकाला, हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ह़ज़रते ह़ात़िब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को बुला कर फ़रमाया कि ऐ ह़ात़िब ! इस का क्या बाइ़स ? उन्हों ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم मैं जब से इस्लाम लाया कभी मैं ने कुफ़्र नहीं किया और जब से हुज़ूर की नियाज़ मन्दी मुयस्सर आई कभी हुज़ूर की ख़ियानत न की और जब से अहले मक्का को छोड़ा कभी उन की मह़ब्बत न आई। लेकिन वाक़िआ़ येह है कि मैं क़ुरैश में रहता था और उन की क़ौम से न था, मेरे सिवाए और जो मुहाजिरीन हैं उन के मक्कए मुकर्रमा में रिश्तेदार हैं जो उन के घरबार की निगरानी करते हैं, मुझे अपने घर वालों का अन्देशा था, इस लिये मैं ने येह चाहा कि मैं अहले मक्का पर कुछ एह़सान रख दूं ताकि वोह मेरे घर वालों को न सताएं और येह मैं यक़ीन से जानता हूं कि **अल्लाह** तआ़ला अहले मक्का पर अ़ज़ाब नाज़िल फ़रमाने वाला है, मेरा ख़त़ उन्हें बचा न सकेगा, सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उन का येह उ़ज़्र क़बूल फ़रमाया और उन की तस्दीक़ की। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم मुझे इजाज़त दीजिये इस मुनाफ़िक़ की गरदन मार दूं, हुज़ूर ने फ़रमाया : ऐ उ़मर ! (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه) **अल्लाह** तआ़ला ख़बरदार है जब ही उस ने अहले बद्र के ह़क़ में फ़रमाया कि जो चाहो करो मैं ने तुम्हें बख़्श दिया, येह सुन कर ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के आंसू जारी हो गए और येह आयात नाज़िल हुईं। 3 : या'नी इस्लाम और क़ुरआन 4 : या'नी मक्कए मुकर्रमा से।

www.dawateislami.net